.... هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ

...जो मोमिनों के हक़ में शिफ़ा और रहमत है।

(17:82)

क़ुरआन से इलाज

... هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ

"...जो मोमिनों के हक़ में शिफ़ा और रहमत है।" (17:82)

क़ुरआन से इलाज

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०

विषय-सूची

ईमान पर ख़ातिमा हो

हर नमाज़ के बाद इस आयत को पढ़ें-

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ○

रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना बअ्-द इज़ हदैतना व हब लना मिल्लदुन-क रह़-म-तन इन्न-क अन्तल वह्हाब०

(सूरः आल-ए-इमरान, 8)

तर्जुमाः- "ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे दिलों को हिदायत के बाद टेढ़ा न कीजिए और हमको अपने पास से रहमत अता फरमाइए, बेशक आप बहुत बख़्शिश करने वाले हैं।"

नबी सल्ल० की शिफ़ाअत नसीब हो

हर नमाज़ के बाद इन आयतों को पढ़ें-

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

लक़द जाअकुम रसूलुम्मिन अन्फ़ुसिकुम अज़ीज़ुन अलैहि मा अनित्तुम हरीसुन अलैकुम बिलमुअ्मिनी-न रऊफ़ुर्रहीम० फ़-इन तवल्लौ फ़क़ुल हस्बियल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अलैहि तवक्कलतु वहु-व रब्बुल अर्शिल अज़ीम०

(सूरः तौबा, 128-129)

तर्जुमाः- "ऐ लोगो! तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाए हैं जो तुम में से हैं। जिनको तुम्हारी तकलीफ़ भारी होती है, तुम्हारी खोज-ख़बर रखते हैं, ईमान वालों पर शफ़ीक़ और मेहरबान हैं। फिर अगर ये लोग फिर जाएं तो आप कह दीजिए: काफ़ी है हमको अल्लाह! किसी की बंदगी नहीं सिवाए उसके। उसी पर मैंने भरोसा किया और वही अज़ीम अर्श का मालिक है।"

दुआ मक़बूल हो

दुआ करने से पहले इस आयत को तीन बार पढ़ें-

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝

ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन॰

(सूरः अम्बिया, 87)

तर्जुमाः- "(इलाही!) आपके सिवा कोई माबूद नहीं है, आप (सब कमियों से) पाक हैं, मैं बेशक कुसूरवार हूं।"

बुरा ख़्याल या वसवसा दूर करना हो

इन आयतों को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ें-

رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۝ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ۝

रब्बि अऊज़ु बि-क मिन ह-मज़ातिश्शयातीन॰ व अऊज़ु बि-क रब्बि अंय्यहज़ुरून॰

(सूरः मोमिनून, 97-98)

तर्जुमा:- "ऐ मेरे रब! मैं आपकी पनाह मांगता हूं शैतानों के धोकों से, और ऐ मेरे रब! मैं आपकी पनाह मांगता हूं इससे कि शैतान मेरे पास भी आए।"

रोज़ी में बरकत हो

हर नमाज़ के बाद इन आयतों को
कम से कम सात बार पढ़ें-

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ
مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ز
وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط
بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ
فِي الَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ز وَتَرْزُقُ
مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

क़ुलिल्लाहुम्-म मालिकल मुल्कि तुअ्तिल मुल्-क मन तशाउ व तन्ज़िउल मुल्-क मिम्मन तशाउ व तुइज़्ज़ु मन तशाउ व तुज़िल्लु मन तशाउ, बियदिकल ख़ैर; इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर० तूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व तुख़रिजुल ह़य्-य मिनल मय्यिति व तुख़रिजुल मय्यि-त मिनल ह़य्यि व तरज़ुक़ु मन तशाउ बिग़ैरि ह़िसाब०

(सूरः आल-ए-इमरान, 26-27)

तर्जुमा:- "(ऐ मुहम्मद!) आप यों कहिए कि ऐ अल्लाह, मालिक तमाम मुल्क के ! आप मुल्क जिसको चाहें दे देते हैं और जिस से चाहें आप मुल्क ले लेते हैं, और जिसको चाहें बा-इज़्ज़त कर देते हैं और जिसको आप चाहें ज़लील कर देते हैं। आप ही के इख़तियार में सब भलाई है। बेशक आप हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं।

आप रात के हिस्सों को दिन में दाख़िल कर देते हैं, और (कुछ मौसमों में) दिन (के हिस्सों) को रात में

दाख़िल कर देते हैं, और आप जानदार चीज़ को बेजान चीज़ से निकाल लेते हैं (जैसे - अंडे से बच्चा), और बेजान चीज़ को जानदार चीज़ से निकाल लेते हैं (जैसे - चिड़िया से अंडा), और आप जिसको चाहते हैं बेशुमार रोज़ी देते हैं।"

कारोबार में तरक़्क़ी हो

रोज़ाना आयतुल-कुर्सी पढ़कर कारोबार के माल पर दम करें-

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝

अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अल-हय्युल क़य्यूमु ला तअख़ुज़ुहू सि-नतुंव्वला नौम, लहू मा फ़िस्समावाति वमा फ़िल अर्ज़ि मन ज़ल्लज़ी

यशफ़उ इन्दहू इल्ला बि-इज़्निही यअ़लमु मा बै-न ऐदीहिम वमा ख़ल-फ़हुम, वला युहीतू-न बिशैइम्मिन इ़ल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल-अर्ज़; वला यऊदुहू हि़फ़्ज़ुहुमा वहुवल अ़लिय्युल अ़ज़ीम०

(सूरः ब-क़रः, 255)

तर्जुमाः- "अल्लाह (ऐसा है कि) उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, ज़िंदा है, हमेशा रहने वाला है, न उसको ऊंघ आती है और न नींद, उसी के ममलूक हैं सब, जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में है, ऐसा कौन शख़्स है जो उसके पास (किसी की) सिफ़ारिश कर सके बिना उसकी इजाज़त के, वह जानता है उनके तमाम हाज़िर व ग़ायब हालात को, और वे मौजूदात उसके मालूमात में से किसी चीज़ को अपने इल्म के अहाते में नहीं ला सकते, मगर जिस कदर (इल्म देना) वही चाहे, उसकी कुर्सी ने तमाम ज़मीनों और आसमानों को अपने घेरे में ले रखा है और अल्लाह तआला को इन दोनों की हिफ़ाज़त कुछ गिरां नहीं गुज़रती, और वह आलीशान रुतबे वाला है।"

मुश्किल काम आसान हो

हर नमाज़ के बाद इस आयत को एक बार पढ़ें-

اَلْئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۚ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

अलआ-न ख़फ़्फ़फ़ल्लाहु अ़न्कुम व अ़लि-म अन्-न फ़ीकुम ज़अ़्फ़ा, फ़-इंय्यकुम्मिन्कुम मिअतुन साबिरतुंय्यग़लिबू मिअतैनि व इंय्यकुम्मिन्कुम अल्फ़ुंय्यग़लिबू अल्फ़ैनि बि-इज़्निल्लाहि वल्लाहु मअ़स्साबिरीन०

(सूरः अनफ़ाल, 66)

तर्जुमा:- "अब अल्लाह ने तुम पर तख़फ़ीफ़ (यानी कमी और नरमी) कर दी और मालूम कर लिया कि तुममें हिम्मत की कमी है, सो अगर तुममें के सौ आदमी साबित क़दम रहने वाले होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आ जाएंगे, और अगर तुममें के हज़ार होंगे तो दो हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से ग़ालिब आ जाएंगे, और अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।"

मन-पसंद ख़रीदारी हो

सामान, फल, कपड़ा, घर और जायदाद वग़ैरह को देखने-भालने के वक़्त इन आयतों को बराबर पढ़ते रहें-

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ
يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ
ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ
يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ
صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ۝ قَالُوا ادْعُ
لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ وَاِنَّآ
اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ۝

क़ालुदउ़ लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य, क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुल्ला फ़ारिज़ुंव्वला बिक्रुन अ़वानुम्बै-न ज़ालि-क फ़फ़्अ़लू मा तुअ्मरून० क़ालुदउ़ लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा लौनुहा, क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुन सफ़राउ फ़ाक़िउ़ल्लौनुहा तसुर्रुन्नाज़िरीन० क़ालुदउ़ लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य इन्नल ब-क़-र तशा-ब-ह अ़लैना व इन्ना इन्शाअल्लाहु लमुहतदून०

(सूरः ब-क़रः, 68-70)

तर्जुमा:- "वे लोग कहने लगे कि आप दरख़्वास्त कीजिए अपने रब से कि हमसे बयान कर दें कि उस (बैल) की सिफ़तें क्या हैं। आप (मूसा) ने फ़रमाया कि वह (अल्लाह) यह फ़रमाता है कि वह ऐसा बैल हो कि न बिलकुल बूढ़ा हो न बहुत बच्चा हो, (बल्कि) जवान हो, दोनों उम्रों के दरमियान में, सो अब (ज़्यादा हुज्जत मत कीजियो बल्कि) कर डालो जो कुछ तुमको हुक्म मिला है।

कहने लगे कि (अच्छा यह भी) दरख़्वास्त कर दीजिए हमारे लिए अपने रब से कि हमसे यह भी बयान कर दें कि उसका रंग कैसा हो। आपने फ़रमाया कि हक़ तआला यह फ़रमाते हैं कि वह एक ज़र्द रंग का बैल हो, जिसका रंग तेज़ ज़र्द (यानी तेज़ पीला) हो कि देखने वालों को अच्छा लगता हो।

कहने लगे कि (अबकी बार और) हमारी ख़ातिर अपने रब से दरख़्वास्त कीजिए कि हमसे बयान कर दें कि उसकी सिफ़तें क्या-क्या हों, क्योंकि हमको उस बैल में (किसी क़दर) इश्तिबाह (यानी सिफ़तें पहचानने में शक व शुब्हा) है, और हम ज़रूर इन्शा-अल्लाह तआला (अबकी बार) ठीक समझ जाएंगे।"

फल मीठा निकले

फल काटने से पहले इस आयत को पढ़ें-

فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ○

फ़-ज़-बहूहा वमा कादू यफ़्अलून०

(सूरः ब-क़रः, 71)

तर्जुमाः- "फिर उसको ज़िबह किया और (उनकी हुज्जतों से बज़ाहिर) करते हुए मालूम न होते थे।"

क़र्ज़ की अदायगी करनी हो

सुबह व शाम इस आयत को
ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ें-

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ
مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ز
وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط
بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

कुलिल्लाहुम्-म मालिकल मुल्कि तुअ्तिल मुल्-क मन तशाउ व तन्ज़िउल मुल्-क मिम्मन तशाउ व तुइज़्ज़ु मन तशाउ व तुज़िल्लु मन तशाउ, बियदिकल ख़ैर; इन्न-क अला कुल्लि शैइन क़दीर०

(सूरः आल-ए-इमरान, 26)

तर्जुमा:- "(ऐ मुहम्मद!) आप यों कहिए कि ऐ अल्लाह, मालिक तमाम मुल्क के ! आप मुल्क जिसको चाहें दे देते हैं और जिस से चाहें आप मुल्क ले लेते हैं, और जिसको चाहें बा-इज़्ज़त कर देते हैं और जिसको आप चाहें ज़लील कर देते हैं। आप ही के इख़तियार में सब भलाई है। बेशक आप हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं।"

ग़म दूर करना हो

इस आयत को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ें-

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَ النَّهَارِ ط
وَهُوَالسَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَاهٗ

व लहू मा स-क-न फ़िल्लैलि वन्नहारि वहुवस्समीउ़ल अ़लीम०

(सूरः अनआ़म, 13)

इन्नल्ला-ह युम्सिकुस्समावाति वल-अ-र्ज़ अन तज़ूला०

(सूरः फ़ातिर, 41)

तर्जुमाः- "और अल्लाह ही की मिल्क है सब कुछ, जो रात में और दिन में रहते हैं और वही है बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला।"

"यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआला आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वह मौजूदा हालत को न छोड़ेंगे।"

चोर, डाकू और आग से हिफ़ाज़त रहे

सोने से पहले इस आयत को तीन बार पढ़ें-

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝

व क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम यत्तख़िज़ व-ल-दंव्व-लम यकुल्लहू शरीकुन फ़िल मुल्कि व लम यकुल्लहू वलिय्युम्मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहु तकबीरा।

(सूरः बनी इसराईल, 111)

तर्जुमाः- "और कह दीजिए कि तमाम ख़ूबियां उसी अल्लाह तआला के लिए (ख़ास) हैं, जो न औलाद रखता है और न बादशाहत में उसका कोई शरीक है, और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है, और उसकी बड़ाईयां खूब बयान किया कीजिए।"

सफ़र में हिफ़ाज़त रहे

सफ़र की मसनून दुआएं पढ़कर इस आयत को पढ़ें-

سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا
وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ ۙ

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन०

(सूरः ज़ुख़रुफ़, 13)

तर्जुमाः- "उसी की ज़ात पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया, और हम तो ऐसे न थे जो इनको क़ाबू में कर लेते।"

किसी गांव व शहर, या पिकनिक की जगह पर जाएं

वहाँ दाख़िल होने से पहले इस आयत को पढ़ें-

رَبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ
خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ○

रब्बि अन्ज़िलनी मुन्ज़-लम्मुबारकंव् व अन्-त ख़ैरुल मुन्ज़िलीन०

(सूरः मोमिनून, 29)

तर्जुमाः- "ऐ मेरे रब! मुझको ज़मीन पर बरकत का उतारना उतारियो, और आप सब उतारने वालों से अच्छे हैं।"

सामान गुम या इधर-उधर हो जाए

"या हफ़ीज़ु" (ऐ निगरानी रखने वाले) 119 बार पढ़कर इस आयत को 119 बार पढ़ें-

يٰبُنَىَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِىْ صَخْرَةٍ اَوْ فِى السَّمٰوٰتِ اَوْ فِى الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ

या बुनय्-य इन्नहा इन तकु मिस्क़ा-ल हब्बतिम्मिन ख़र्दलिन फ़-तकुन फ़ी सख़-रतिन अव फ़िस्-समावाति औ फ़िल अर्ज़ि यअ्ति बिहल्लाहु

(सूरः लुक़मान, 16)

तर्जुमाः- "ऐ बेटे! अगर कोई अमल राई के दाने के बराबर हो, फिर वह किसी पत्थर के अन्दर हो या वह आसमान के अन्दर हो या वह ज़मीन के अन्दर हो, तब भी उसको अल्लाह तआला हाज़िर कर देगा।"

गुमशुदा या भागे हुए शख़्स की वापसी चाहते हों

दो रकअत नफ़िल पढ़कर इस आयत को 119 बार चालीस दिन तक पढ़ें, और उसके वापसी की दुआ करें-

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ

इन्नल्लज़ी फ़-र-ज़ अलैकल क़ुरआ-न ल-राद्दु-क इला मआद

(सूरः क़सस, 85)

तर्जुमा:- "जिस अल्लाह ने आप पर क़ुरआन (के हुक्मों पर अमल और उसकी तबलीग़) को फ़र्ज़ किया है, वह आपको (आपके) वतन में फिर पहुंचाएगा।"

मुसीबत से निजात पाना हो

जो कोई किसी मुसीबत और बला में मुब्तला हो, या उसमें मुब्तला होने का ख़ौफ हो, इस आयत को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े-

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ○

हस्बुनल्लाहु व नेअ्मल वकील०

(सूरः आल-ए-इमरान, 173)

तर्जुमाः- "हमको अल्लाह तआला काफ़ी है और वही सब काम सुपुर्द करने के लिए अच्छा है।"

शौहर, बीवी पर मेहरबान रहे

इस आयत को किसी मीठी चीज़ पर पढ़कर शौहर को खिलाएं-

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ○

व मिनन्नासि मंय्यत्तख़िज़ु मिन दूनिल्लाहि अन्दादंय् युहिब्बूनहुम कहुब्बिल्लाहि वल्लज़ी-न आ-मनू अशद्दु हुब्बल्लिल्लाहि वलौ यरल्लज़ी-न ज़-लमू इज़ यरौनल अ़ज़ा-ब अन्नल क़ुव्व-त लिल्लाहि जमीअ़ंव् व अन्नल्ला-ह शदीदुल अ़ज़ाब॰

(सूरः ब-क़रः, 165)

तर्जुमाः- "और कुछ आदमी ऐसे (भी) हैं जो अल्लाह तआला के अलावा औरों को भी (ख़ुदाई में) शरीक क़रार देते हैं, उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से (रखना ज़रुरी) है, और जो मोमिन हैं उनको अल्लाह तआला के साथ क़वी मुहब्बत है, और क्या खूब होता अगर ये ज़ालिम (मुश्रिकीन) जब (दुनिया में) किसी मुसीबत को देखते तो (उसके पेश आने में ग़ौर करके) समझ लिया करते कि सब ताक़त हक़ तआला ही को है, और यह (समझ लिया करते) कि अल्लाह तआला का अज़ाब (आख़िरत में और भी) सख़्त होगा।"

औलाद न होती हो

जिसको औलाद न होने से मायूसी हो, इस आयत को पढ़ा करे-

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۝

रब्बि हब ली मिल्लदुन-क ज़ुर्रीय्यतन तय्यि-बतन इन्न-क समीउद्दुआ०

(सूरः आल-ए-इमरान, 38)

तर्जुमाः- "ऐ मेरे रब! मुझको ख़ास अपने पास से कोई अच्छी औलाद इनायत कीजिए। बेशक आप दुआ के सुनने वाले हैं।"

विलादत में आसानी हो

बच्चे की विलादत (जनने) के वक़्त इस आयत को पढ़कर औरत पर दम करें-

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ

وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ

وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ

اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ○

अ-व-लम यरल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नस्समावाति वल अ-र्ज़ का-नता रत-क़न फ़-फ़तक़्नाहुमा व ज-अ़लना मिनल माइ कुल्-ल शैइन ह़य्यिन अ-फ़ला युअ्मिनून०

(सूरः अम्बिया, 30)

तर्जुमा:- "क्या उन काफ़िरों को यह मालूम नहीं हुआ कि आसमान और ज़मीन (पहले) मिले हुए थे, फिर हमने दोनों को (अपनी कुदरत से) अलग-अलग कर दिया और हमने (बारिश के) पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया है, क्या (इन बातों को सुनकर) फिर भी ये लोग ईमान नहीं लाते।"

औलाद को नेक बनाना हो

बच्चे का नाम दिमाग़ में रखकर हर नमाज़ के बाद इस आयत को पढ़ें-

وَاَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ ۚ
اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْكَ وَاِنِّیْ
مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ○

व असलिह़ ली फ़ी ज़ुर्रीय्यती, इन्नी तुब्तु इलै-क व इन्नी मिनल मुस्लिमीन०

(सूरः अह़क़ाफ़, 15)

तर्जुमा:- "और आप मेरी औलाद को भी नेक बना दें, मैं आपकी जनाब में तौबा करता हूं और मैं फ़रमांबरदार हूं।"

दुश्मन का डर भगाना हो

इस आयत को एक बार पढ़कर हथेली पर दम करके पूरे बदन पर फेरें-

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ ز وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ج وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ○

ला तुद्रिकुहुल अबसारु वहु-व युद्रिकुल अबसा-र, वहुवल्लती़फ़ुल ख़बीर०

(सूरः अनआम, 103)

तर्जुमाः- "उसको तो किसी की निगाह नहीं पा सकती और वह सब निगाहों को घेर लेता है, और वही बड़ा बारीकी जानने वाला और बाख़बर है।"

ज़ालिम से निजात पाना हो

ज़ालिम के सामने धीरे-धीरे इस आयत को पढ़ें-

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ○

फ़-स-तज़्कुरू-न मा अक़ूलु लकुम व उफ़व्विज़ु अमरी इलल्लाहि इन्नल्ला-ह बसीरुम्बिल इबाद॰

(सूर: मोमिन, 44)

तर्जुमा:- "आगे चलकर तुम मेरी बात को याद करोगे, और मैं अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूं। अल्लाह तआला सब बन्दों का निगरां है।"

सांप, बिच्छू और ज़हरीले जानवरों से हिफ़ाज़त रहे

सुबह-शाम इन आयतों को पढ़ें-

سَلٰمٌ عَلٰی نُوْحٍ فِی الْعٰلَمِیْنَ○

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ○

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِیْنَ○

सलामुन अ़ला नूह़िन फ़िल आ़-लमीन॰
इन्ना कज़ालि-क नजज़िल मुह़सिनीन॰
इन्नहू मिन इ़बादिनल मुअ्मिनीन॰

(सूर: साफ़्फ़ात, 79-81)

तर्जुमा:- "हज़रत नूह (अलै॰) पर सलाम हो आ़लम वालों में। हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते है। बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे।"

सांप या बिच्छू काट ले

काटने के फ़ौरन बाद इस आयत को पढ़ें-

نُوْدِیَ اَنْ بُوْرِكَ مَنْ فِی النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○

नूदि-य अम्बूरि-क मन फ़िन्नारि व मन हौलहा व सुब्हानल्लाहि रब्बिल आलमीन०

(सूरः नम्ल, 8)

तर्जुमा:- "आवाज़ दी गई कि जो इस आग के अन्दर है (यानी फ़रिश्ते) उन पर भी बरकत हो और जो इसके पास है (यानी मूसा अलै०) उन पर भी (बरकत हो), और अल्लाह रब्बुल-आलमीन पाक है।"

कुत्ते के हमले का डर हो

इस आयत को 11 बार पढ़ें-

وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ

व कल्बुहुम बासितुन ज़िराऔहि बिल वसीद।

(सूरः कहफ़, 18)

तर्जुमाः- "और उनका कुत्ता दहलीज़ पर अपने दोनों हाथ फैलाए हुए था।"

कोई भी बीमारी हो

इस आयत को पढ़कर मरीज़ पर दम करें-

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ
شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ

व नुनज़्ज़िलु मिनल कुरआनि मा हु-व शिफ़ाउंव् व रह़मतुल्लिल मुअ्मिनीन।

(सूरः बनी इसराईल, 82)

तर्जुमाः- "और हम कुरआन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं कि वह ईमान वालों के हक़ में तो शिफ़ा व रहमत है।"

सर में दर्द हो

सूरः कौसर को 7 बार पढ़कर मरीज़ पर दम करें-

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اِنَّاۤ اَعۡطَيۡنٰكَ الۡكَوۡثَرَ ؕ

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانۡحَرۡ ؕ

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الۡاَبۡتَرُ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इन्ना अअतैना कलकौसर० फ़-सल्लि लिरब्बि-क वनहर० इन्-न शानि-अ-क हुवल अबतर०

(सूरः कौसर)

तर्जुमा:- "बेशक हमने आपको कौसर (एक हौज़ का नाम है, और हर बड़ी भलाई इसमें दाख़िल है) अता फ़रमाई है। सो (इन नेमतों के शुक्रिए में) आप अपने परवदिगार के लिए नमाज़ पढ़िए और कुर्बानी कीजिए। यक़ीनन आपका दुश्मन ही बेनाम व बेनिशान है।"

अधिकपारी हो

इस आयत को पढ़कर मरीज़ पर दम करें-

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ
قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ لَا
يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ

क़ुल मर्रब्बुस्समावाति वल अर्ज़ि क़ुलिल्लाहु क़ुल अफ़त्तख़ज़्तुम् मिन दूनिही औलिया-अ ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम नफ़्अंव् वला ज़र्रा।

(सूरः रअ़द, 16)

तर्जुमाः- "आप पूछिए कि आसमानों और ज़मीन का परवर्दिगार कौन है? आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह है। (फिर) आप (यह) कहिए कि क्या फिर भी तुमने उसके (यानी अल्लाह के) सिवा (दूसरे) मददगार बना रखे हैं जो अपनी ज़ात के नफ़े-नुक़सान का भी इख़्तियार नहीं रखते।"

यादداشت कमज़ोर हो

इस आयत को 7 बार पढ़कर अपने या मरीज़ पर दम करें-

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ
اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ

सनुक़रिउ-क फ़ला तन्सा० इल्ला माशाअल्लाह।

(सूर: अअ्ला, 6-7)

तर्जुमा:- "(इस क़ुरआन के बारे में हम वायदा करतें हैं कि) हम (जितना) क़ुरआन (नाज़िल करते जाएंगे) आपको पढ़ा दिया करेंगे (यानी वह याद करा दिया करेंगे), फिर आप उसमें से कोई हिस्सा नहीं भूलेंगे। मगर जिस क़दर भुलाना अल्लाह को मंज़ूर हो।"

भूलने की बीमारी हो

सोने से पहले इस आयत को 11 बार पढ़ें-

سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۭ
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝

सुब्हा-न-क ला इल्-म लना इल्ला मा अ़ल्लम-तना इन्-न-क अन्तल अ़लीमुल ह़कीम०

(सूरः ब-क़रः, 32)

तर्जुमाः- "आप (अल्लाह) तो पाक हैं हमको कोई इल्म नहीं, मगर वही जो कुछ आपने हमको इल्म दिया। बेशक आप बड़े इल्म वाले हैं, बड़े हिक्मत वाले हैं।"

दिल दुखी हो

इस आयत को बार-बार पढ़ें-

اَلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ تَطۡمَئِنُّ قُلُوۡبُهُمۡ بِذِکۡرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِکۡرِ اللّٰهِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ ۝

अल्लज़ी-न आ-मनू व तत्मइन्नु क़ुलूबुहुम बिज़िक्रिल्लाहि, अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मइन्नुल क़ुलूब०

(सूरः रअ़द, 28)

तर्जुमाः- "वे लोग जो ईमान लाए और अल्लाह तआला के ज़िक्र से उनके दिलों को इत्मीनान होता है। ख़ूब समझ लो कि अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान हो जाता है।"

नींद न आती हो

बिस्तर छोड़ने से पहले इस आयत को 11 बार पढ़ें-

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ○

इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू युसल्लू-न अ़लन्नबिय्यि, या अय्युहल्लज़ी-न आ-मनू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमा०

(सूरः अह्ज़ाब, 56)

तर्जुमा:- "बेशक अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर। ऐ ईमान वालो! तुम भी आप (सल्ल०) पर दुरूद और सलाम बार-बार भेजा करो।"

नज़र कमज़ोर हो

हर नमाज़ के बाद इस आयत को 3 बार पढ़ कर दोनों हाथों की उंगलियों पर दम करके दोनों आंखों पर फेरें-

فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ۝

फ़-कशफ़्ना अ़न्-क ग़िता-अ-क फ़-ब-सरुकल यौ-म ह़दीद॰

(सूरः क़ाफ़, 22)

तर्जुमाः- "सो अब हमने तेरे ऊपर से तेरा (ग़फ़लत का) पर्दा हटा दिया, सो आज (तो) तेरी निगाह बड़ी तेज़ है।"

कम सुनाई देता हो

इस आयत को 7 बार पढ़कर मरीज़ पर दम करें-

وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ○

व इज़ा क़ुरिअल क़ुरआनु फ़स्तमिऊ़ लहू व अन्सितू लअ़ल्लकुम तुर-ह़मून०

(सूरः आराफ़, 204)

तर्जुमा:- "और जब क़ुरआन पढ़ा जाया करे तो उसकी तरफ़ कान लगा दिया करो, और ख़ामोश रहा करो, उम्मीद है कि तुम पर (नई या और ज़्यादा) रहमत हो।"

नज़ला और ज़ुकाम हो

खाना खाने से पहले इस आयत को 11 बार पढ़कर खाने पर दम करें-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْکِتٰبَ وَلَمْ یَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۝

अल-ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़-ल अ़ला अ़ब्दिहिल किता-ब व लम यज-अ़ल्लहू इ़-वजा॰

(सूरः कहफ़, 1)

तर्जुमाः- "तमाम ख़ूबियां उस अल्लाह के लिए (साबित) हैं जिसने अपने (ख़ास) बन्दे पर (यह) किताब नाज़िल फरमाई, और इसमें ज़रा भी कजी नहीं रखी।"

दांत में दर्द हो

सूर: फ़ातिहा पढ़कर इस आयत को 7 बार पढ़ें, फिर दाहिने हाथ पर दम करके तकलीफ़ वाली जगह पर फेरें-

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○

व लहू मा स-क-न फ़िल्लैलि वन्नहारि व हुवस्समीउ़ल अ़लीम०

(सूर: अनआ़म, 13)

तर्जुमा:- "और उसी की (यानी अल्लाह ही की मिल्क) है सब, जो कुछ रात और दिन में रहते हैं, और वही है बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला।"

बोलने में हकलाहट हो

हर नमाज़ के बाद इस आयत को 21 बार पढ़ें-

رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ۙ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ۙ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ۙ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ۠

रब्बिश-रह् ली सद्‌री॰ व यस्सिर ली अमरी॰ वह्‌लुल उक़्दतम्मिल्लिसानी॰ यफ़्क़हू क़ौली॰

(सूर: तॉ-हा, 25-28)

तर्जुमाः- "ऐ मेरे परवर्दिगार, मेरा हौसला बढ़ा दीजिए, और मेरा (यह) काम (तब्लीग़ को) आसान फ़रमा दिजिए, और मेरी ज़ुबान से गिरह (हकलेपन को) हटा दीजिए, ताकि लोग मेरी बात समझ सकें।"

गले में घाव या ख़राबी हो

इस आयत को 7 बार पढ़कर थोड़े से नमक पर दम करके उसे गले के अन्दर पहुंचाएं-

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ۝ۙ
وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ۝ۙ

फ़-लौला इज़ा ब-ल-ग़तिल हुलकूम० व अन्तुम हीनइज़िन तन्ज़ुरून०

(सूरः वाक़िआ, 83-84)

तर्जुमा:- "सो जिस वक़्त रूह हलक़ तक आ पहुंचती है, और तुम उस वक़्त तका करते हो।"

सीने में दर्द हो

इस आयत को 41 बार पढ़कर ज़मज़म के पानी में दम करें, और उसे मरीज़ को पिलाएं-

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ۙ

व यश्फ़ि सुदू-र क़ौमिम्मुअ्मिनीन०

(सूरः तौबा, 14)

तर्जुमा:- "और (अल्लाह) मोमिन लोगों के सीनों को शिफ़ा देगा।"

खांसी आती हो

इस आयत को 41 बार पढ़कर ज़मज़म के पानी में दम करें, और उसे मरीज़ को पिलाएं-

سَلٰمٌ قف قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ○

सलामुन, क़ौलम्मिर्रब्बिर्रहीम०

(सूरः यासीन, 58)

तर्जुमाः- "उनको मेहरबान रब की तरफ़ से सलाम फ़रमाया जाएगा।"

घबराहट हो

फ़ज्र की नमाज़ के बाद इस आयत को 21 बार पढ़कर पानी में दम करके मरीज़ को पिलाएं, यह अमल 21 दिन तक जारी रखें-

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا
وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ
إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ○

रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना बअ्-द इज़् हदै-तना व हब लना मिल्लदुन-क रह्-म-तन इन्-न-क अन्तल वह्हाब०

(सूरः आल-ए-इमरान, 8)

तर्जुमाः- "ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे दिलों को टेढ़ा न कीजिए बाद इसके कि आप हमको हिदायत कर चुके हैं, और हमको अपने पास से (ख़ास) रहमत अता फ़रमाइए, बेशक आप बड़े अता फ़रमाने वाले हैं।"

पेट में दर्द हो

इस आयत को 7 बार पढ़कर थोड़े से नमक पर दम करके और उसे चाट लें-

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْ
بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ

वल्लाहु अख़-र-जकुम मिम्बुतूनि उम्महातिकुम।

(सूरः नहल, 78)

तर्जुमाः- "और अल्लाह ने तुमको तुम्हारी मांओं के पेट से निकाला।"

बदहज़मी हो

इस आयत को 7 बार पढ़कर नमक पर दम करके उसे चाट लें-

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۭ
وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ○

व बिल हक़्क़ि अन्ज़लनाहु व बिल हक़्क़ि न-ज़-ल, वमा अरसलना-क इल्ला मुबश्शिरंव् व नज़ीरा०

(सूरः बनी इसराईल, 105)

तर्जुमाः- "और हमने इस (कुरआन) को सच्चाई ही के साथ नाज़िल किया और वह सच्चाई ही के साथ नाज़िल हो गया, और हमने आप (नबी सल्ल०) को सिर्फ़ खुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है।"

दस्त आता हो

इस आयत को 1000 बार पढ़कर पानी में दम करके मरीज़ को 7 दिन तक पिलाएं-

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَّالَّذِينَ هُمْ مُّحْسِنُونَ ۝

इन्नल्ला-ह म-अ़ल्लज़ीनत्त-क़व वल्लज़ी-न हुम मुह़सिनून॰

(सूरः नह्ल, 128)

तर्जुमाः- "अल्लाह तआला ऐसे लागों के साथ (होता) है जो परहेज़गार (होते) हैं और जो नेक काम करने वाले (होते) हैं।"

प्यास ज़्यादा लगती हो

इस आयत को 7 बार पढ़कर पानी में दम करके पी लें-

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ ۖ

व अन्ज़लना मिनस्समा-इ माअम्बि-क़-दरिन फ़-अस्कन्नाहु फ़िल अर्ज़ि।

(सूरः मोमिनून, 18)

तर्जुमाः- "और हमने आसमान से (मुनासिब) मिक़दार के साथ पानी बरसाया, फिर हमने उसको (मुद्दत तक) ज़मीन में ठहराया।"

भूख न लगती हो

इस आयत को 41 बार पढ़कर खाने पर दम करके उसे मरीज़ को खिला दें-

هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ۝

हु-व युत़-इमुनी व यस्क़ीन०

(सूरः शुअ़रा, 79)

तर्जुमा:- "वह (अल्लाह) मुझको खिलाता पिलाता है।"

भूख ज़्यादा लगती हो

जिसको खाना खाने के बाद भी भूख लगती हो, वह इस आयत को 11 बार पढ़कर पानी में दम करके खाने से पहले पी ले-

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ
وَمَا تُوعَدُونَ ۝

व फ़िस्समाइ रिज़्क़ुकुम वमा तू-अदून०

(सूरः ज़ारियात, 22)

तर्जुमाः- "और तुम्हारा रिज़्क़ और जो तुमसे (क़यामत के मुतअल्लिक़) वायदा किया जाता है (उन सबका मुतैयन वक़्त) आसमान में है।"

जिगर की बीमारी के लिए

जिगर की तमाम बीमारियों के लिए इस आयत को हर दिन पढ़कर पानी में दम करके मरीज़ को पिलाएं-

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ
وَالْاِكْرَامِ۝

तबा-र-कस्मु रब्बि-क ज़िल जलालि वल इकराम०

(सूरः रहमान, 78)

तर्जुमाः- "बड़ा बाबरकत नाम है आपके रब का, जो बड़ाई वाला और एहसान वाला है।"

पित्ते की बीमारी के लिए

इस आयत को 11 बार पढ़कर पानी में दम करके मरीज़ को पिलाएं-

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ○

अर्रह़मानु अ़लल अ़र्शिस्तवा०

(सूरः तॉ-हा, 5)

तर्जुमाः- "(और वह) बड़ी रहमत वाला (है) अर्श पर क़ायम है। "

पीलिया हो

इस आयत को 101 बार पढ़कर पानी में दम करके मरीज़ को पिलाएं-

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

सब्ब-ह् लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वमा फ़िल अर्ज़ि वहुवल अ़ज़ीज़ुल ह्कीम॰

(सूरः हश्र, 1)

तर्जुमाः- "अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ कि आसमानों और ज़मीन में (मख़लूक़ात) हैं (चाहे अपनी ज़ुबान से या अपने हाल से), और वह ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है।"

गुर्दे में दर्द हो

सूरः क़ुरैश एक बार पढ़कर खाने पर दम करके मरीज़ को खिलाएं-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ○ۙ

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ○ۚ

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ○ۙ

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ ۵

وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ○

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

लिईलाफ़ि कुरैश० ईलाफ़िहिम रिह्-ल-तशिशताइ वस्सैफ़० फ़ल-यअ्बुदू रब्-ब हाज़ल बैत० अल्लज़ी अत्-अ्-महुम मिन जूइंव्-व आ-म-नहुम मिन ख़ौफ़०

(सूरः कुरैश)

तर्जुमा:- "चूंकि कुरैश आदी हो गए हैं। यानी जाड़े और गर्मी के सफ़र के आदी हो गए हैं। तो (इस नेमत के शुक्रिए में) उनको चाहिए, कि इस ख़ाना-ए-काबा के मालिक की इबादत करें, जिसने उनको भूख में खाने को दिया और ख़ौफ़ से उनको अमन दिया।"

गुर्दे में पथरी हो

इस आयत को 21 बार पढ़कर पानी में दम करें और उसे कुछ दिन तक पीते रहें-

وَهُوَ الَّذِیۡ یُرۡسِلُ الرِّیٰحَ بُشۡرًۢا بَیۡنَ یَدَیۡ رَحۡمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤی اِذَاۤ اَقَلَّتۡ سَحَابًا ثِقَالًا سُقۡنٰهُ لِبَلَدٍ مَّیِّتٍ فَاَنۡزَلۡنَا بِهِ الۡمَآءَ فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖ مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخۡرِجُ الۡمَوۡتٰی لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ ۝

वहुवल्लज़ी युरसिलुर्रिया-ह बुशरम्बै-न यदै रह-मतिही हत्ता इज़ा अक़ल्लत सहाबन सिक़ालन

सुक़्नाहु लि-ब-लदिम्मय्यितिन फ़-अन्ज़लना बिहिल मा-अ फ़-अख़्रजना बिही मिन कुल्लिस्स़-मराति कज़ालि-क नुख़्रिजुल मौता लअ़ल्लकुम तज़क्करून॰

(सूरः आराफ़, 57)

तर्जुमाः- "और वह (अल्लाह) ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वे खुश कर देती हैं, यहां तक कि जब वे हवाएं भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उस बादल को किसी सूखी ज़मीन की तरफ़ हांक ले जाते हैं, फिर उस बादल से पानी बरसाते हैं, फ़िर उस पानी द्वारा हर क़िस्म के फल निकालते हैं, यूं ही हम मुर्दों को (जिन्दा) निकाल खड़ा कर देंगे, ताकि तुम समझो।"

मसाने की बीमारी हो

इस आयत को 11 बार पढ़कर पानी में दम करके पिलाएं, यह अमल 11 दिन तक जारी रखें-

يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۚ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○

या इबादियल्लज़ी-न असरफ़ू अला अन्फ़ुसिहिम ला तक़नतू मिर्रह्-मतिल्लाहि, इन्नल्ला-ह यग़फ़िरु-ज़्ज़ुनू-ब जमीअ़न इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

(सूरः ज़ुमर, 53)

तर्जुमा:- "ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने (कुफ़्र व शिर्क करके) अपने ऊपर ज़्यादतियां की हैं, कि तुम अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो, यक़ीनन अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा। वाक़ई वह बड़ा बख़्शने वाला (और) बड़ी रहमत वाला है।"

पेशाब की बीमारी हो

इस आयत को रोज़ाना 101 बार पढ़ें-

وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَیْءٍ حَیٍّ ؕ اَفَلَا یُؤْمِنُوْنَ ۝

व ज-अ़लना मिनल माइ कुल्-ल शैइन ह़य्यिन अ-फ़ला युअ्मिनून॰

(सूरः अम्बिया, 30)

तर्जुमाः- "और हमने (बारिश के) पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया है, क्या (इन बातों को सुनकर) फिर भी ये लोग ईमान नहीं लाते।"

पेशाब रुक जाए

सूरः इख़्लास को 11 बार पढ़कर पानी में दम करके पी लें-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

क़ुल हुवल्लाहु अ-हद० अल्लाहुस्स-मद० लम यलिद् व लम यूलद० व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अ-हद०

(सूरः इख़लास)

तर्जुमाः- "आप (उन लोगों से) कह दीजिए कि वह यानी अल्लाह तआला (अपनी ज़ात व सिफ़ात के कमाल में) एक है। अल्लाह (ऐसा) बेनियाज़ है (कि वह किसी का मोहताज नहीं और उसके सब मोहताज हैं)। उसके कोई औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है, और न कोई उसके बराबर का है।"

पेशाब ज़्यादा आता हो

इस आयत को 41 बार पढ़कर चीनी पर दम करके मरीज़ को चटाएं या उसकी कोई मीठी चीज़ बनाकर उसे खिलाएं-पिलाएं-

وَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسۡكَنّٰهُ فِى الۡاَرۡضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوۡنَ ۚ

व अन्ज़लना मिनस्समाइ माअम्बि-क़-दरिन फ़-असकन्नाहु फ़िल अर्ज़ि व इन्ना अ़ला ज़हाबिम्बिही लक़ादिरून॰

(सूरः मोमिनून, 18)

तर्जुमा:- "और हमने आसमान से (मुनासिब) मिक़दार के साथ पानी बरसाया, फिर हमने उसको (मुद्दत तक) ज़मीन में ठहराया। और हम उस (पानी) के ख़तम कर देने पर (भी) क़ादिर हैं।"

सुजाक की बीमारी हो

हर नमाज़ के बाद इस आयत को 7 बार पढ़ें-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○

ला इला-ह इल्ला हुवर्रह़्मानुर्रह़ीम०

(सूर: ब-क़र:, 163)

तर्जुमा:- "उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, (वही) रहमान और रहीम है।"

बवासीर की बीमारी हो

इस आयत को पढ़कर मरीज़ के बाज़ू पर दम करें-

لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۚ

ला यरौ–न फ़ीहा शमसंव्वला ज़म–हरीरा०

(सूरः दहर, 13)

तर्जुमा:- "न वहां तपिश (और गर्मी) पाएंगे और न जाड़ा।"

उंगली और अंगूठे में दर्द हो

इस आयत को 300 बार पढ़कर तिल के तेल पर दम करें, फिर उंगली और अंगूठे पर उससे मालिश करें-

لَا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۙ۝

ला युसद्दकु-न अनहा वला युन्ज़िफ़ून॰

(सूरः वाक़िआ, 19)

तर्जुमाः- "न उससे उनको सर दर्द होगा और न उससे अक़ल में फ़तूर आएगा।"

घुटने में दर्द हो

इस आयत को पढ़कर पानी में दम करके पी लें-

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ

व इज़ा स-अ-ल-क इबादी अन्नी फ़-इन्नी क़रीबुन उजीबु दअ्वतद्दाइ इज़ा दआनि।

(सूरः ब-क़रः, 186)

तर्जुमा:- "और जब आप से मेरे बन्दे मेरे मुतअल्लिक़ दरियाफ़्त करें तो (आप मेरी तरफ़ से फ़रमा दीजिए कि) मैं क़रीब ही हूं, (और नामुनासिब दरख्वास्त को छोड़कर) मंजूर कर लेता हूं (हर) अर्ज़ी दरख़्वास्त करने वाले की, जबकि वह मेरे हुजूर में दरख़्वास्त दे।"

मां का दूध नाकाफ़ी हो

माँएं अपना दूध बढ़ाने के लिए इस आयत को 21 बार पढ़कर पानी में दम करके पी लें, यह अमल 21 दिन तक जारी रखें-

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَلَا تَخَافِىْ وَلَا تَحْزَنِىْۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ○

व अवहैना इला उम्मे मूसा अन अर्ज़िईहि फ़-इज़ा ख़िफ़्ति अलैहि फ़-अलक़ीहि फ़िल यम्मि वला तख़ाफ़ी वला तहज़नी इन्ना राद्दूहु इलैकि व जाइलूहु मिनल मुरसलीन०

(सूरः क़सस, 7)

तर्जुमाः- "और (जब मूसा पैदा हुए तो) हमने मूसा की मां को इलहाम किया कि तुम उनको दूध पिलाओ। फिर जब तुमको उनके बारे में (जासूसों के ख़बर पाने का) अंदेशा हो तो (बिना किसी डर और ख़तरे के) उनको (नील) दरिया में डाल देना। और न तो (डूब जाने का) अंदेशा करना और न (जुदाई पर) ग़म करना, (क्योंकि) हम ज़रूर उनको फिर तुम्हारे ही पास वापस पहुंचा देंगे और (फिर अपने वक़्त पर) उनको पैग़म्बर बना देंगे।"

हैज़ वक़्त पर न आए

इस आयत को रोज़ाना 341 बार पढ़कर ज़मज़म के पानी में दम करके पी लें-

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ ق اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ ۚ ج ۖ

ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन०

(सूरः अम्बिया, 87)

तर्जुमाः- "(इलाही) आपके सिवा कोई माबूद नहीं है, आप (सब कमियों से) पाक हैं, मैं बेशक कुसूरवार हूं।"

हैज़ वक़्त से ज़्यादा आए

सूर: कौसर को रोज़ाना 303 बार पढ़कर बारिश के पानी में दम करके पी लें-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ○ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ○

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ○

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अअ्तैनाकल कौसर० फ़-सल्लि लिरब्बि-क वनहर० इन्-न शानि-अ-क हुवल अबतर०

(सूर: कौसर)

तर्जुमा:- "बेशक हमने आपको कौसर (एक हौज़ का नाम है, और हर बड़ी भलाई इसमें दाख़िल है) अता फ़रमाई है। सो (इन नेमतों के शुक्रिए में) आप अपने परवर्दिगार के लिए नमाज़ पढ़िए ओर क़ुर्बानी कीजिए। यक़ीनन आपका दुश्मन ही बेनाम व बेनिशान है।"

खाज-खुजली हो

रोजाना सुबह-शाम इस आयत को 21 बार पढ़कर पानी में दम करके पिएं-

فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۖ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ۭ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝

फ़-कसौनल इ़ज़ा-म लह़-मन सुम्-म अन-शअ्नाहु ख़ल-क़न आ-ख़-र फ़-तबारकल्लाहु अह्सनुल ख़ालिक़ीन०

(सूरः मोमिनून, 14)

तर्जुमा:- "फिर हमने उस नुत्फ़े को ख़ून का लोथड़ा बना दिया, फिर हमने उस ख़ून के लोथड़े को (गोश्त की) बोटी बना दिया, फिर हमने उस बोटी (के बाज़ हिस्सों) को हड्डियां बना दिया, फिर हमने उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया, फिर हमने (रूह डालकर) उसको एक दूसरी ही (तरह की) मख़लूक़ बना दिया। सो कैसी बड़ी शान है अल्लाह की, जो तमाम बनाने वालों से बढ़कर है।"

एहतलाम होता हो

इस आयत को सोने से पहले पढ़े-

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي

الْاٰخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ

ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

लहुमुल बुशरा फ़िल हयातिद्दुनया व फ़िल आख़ि-रति ला तबदी-ल लिकलिमातिल्लाहि ज़ालि-क हुवल फ़ौज़ुल अज़ीम०

(सूरः यूनुस, 64)

तर्जुमा:- "उनके लिए दुनियावी ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी (अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ौफ़ व रंज से बचने की) खुशख़बरी है, (और) अल्लाह की बातों में (यानी वायदों में) कुछ फ़र्क़ नहीं (हुआ करता), यह (खुशख़बरी जो ज़िक्र हुई) बड़ी कामयाबी है।"